

से नगण तथा सात या सात से अधिक यगण होते हैं।

**सिंह-विक्रीड** पुं. (तत्.) 1. सिंह सदृश क्रीडा करने वाला 2. छंद. वर्णिक दंडक वृत्त का एक भेद जिसमें नौ से अधिक यगण होते हैं वि. प्राकृत भाषा के कवियों ने इसका अधिक प्रयोग किया है।

**सिंह-विक्रीडित** पुं. (तत्.) 1. योग में एक प्रकार की समाधि 2. (संगीत.) एक प्रकार की ताल।

**सिंह-विजृम्भित** पुं. (तत्.) बौद्धमतानुसार एक प्रकार की 'समाधि'।

**सिंह-विष्कम्भित** पुं. (तत्.) एक तरह की समाधि।

**सिंह-विष्टर** पुं. (तत्.) सिंहासन।

**सिंह-विस्फूर्जित** पुं. (तत्.) 1. सिंहनाद 2. छंद. एक समवर्णिक छंद जिसके प्रत्येक चरण में (म, म, भ, म, य, य) गणों के क्रम से 18 वर्ण होते हैं तथा 5, 6, 7 पर यति होती है।

**सिंह-संहनन** पुं. (तत्.) सिंह की हत्या 1. सिंह जैसी रूपाकृति वाला 2. सुंदर और बलिष्ठ अंगों वाला।

**सिंहस्थ** वि. (तत्.) ज्यो. सिंह राशि में स्थित कोई ग्रह जैसे- सिंहस्थ वृहस्पति।

**सिंह-हनु** वि. (तत्.) सिंह की सी दाढ़ वाला पुं. गौतम बुद्ध के पितामह का नाम।

**सिंहा स्त्री.** (तत्.) 1. भटकटैया, कटाई 2. करेभू का साग 3. बन भाँटा पुं. 1. सिंह लग्न 2. सूर्य का सिंह लग्नस्थ होना 3. नाग देवता।

**सिंहाण/सिंहान** पुं. (तत्.) 1. लोहे का जंग या मुरचा 2. नाक कान मल, रेंट, सीड़ा।

**सिंहासन** पुं. (तत्.) 1. कृष्ण सिंधुवार (काल संभालू) काली निर्गुडी 2. वासक (अड़सा)।

**सिंहारव** पुं. (तत्.) कर्नाटकी पद्धति का एक राग।

**सिंहारहार** पुं. (देश.) हरसिंगार का वृक्ष या पुष्प।

**सिंहाली स्त्री.** (तत्.) सिंहली पीपल, सेंहली।

**सिंहावलोक** पुं. (तत्.) छंद. एक प्रकार का वृत्त।

**सिंहावलोकन** पुं. (तत्.) 1. सिंह का आगे बढ़ते हुए पीछे की ओर मुड़कर देखने की वृत्ति 2. लाक्ष. (i) किसी रचनात्मक कार्य को करते हुए पिछली बातों पर या पहले हुए कार्यों/सुझावों पर भी दृष्टिपात कर लेना (ii) संक्षेप में पिछली बातों का दिग्दर्शन 3. काव्य. (i) ऐसी पद्य रचना जिसमें दूसरा चरण प्रथम चरण के अंतिम शब्द या अंत में आए कुछ शब्दों से प्रारम्भ होता है (ii) यमक अलंकार का एक भेद जिसमें छंद का अंत भी उसी शब्द से लिया जाता है जिससे उसका आरंभ हुआ हो (ii) यमक अलंकार का एक भेद जिसमें छंद का अंत भी उसी शब्द से लिया जाता है जिससे उसका आरंभ हुआ हो 4. पत्र लेखन में परस्पर संबंधित घटनाओं या तथ्यों का सारांश।

**सिंहावलोकनिक** वि. (तत्.) 1. जो सिंहावलोकन से संबंधित हो 2. उनतीत पर विचार करते हुए वर्तमान विषय पर विचार व्यक्त करने वाला।

**सिंहावलोकित** वि. (तत्.) जिसका या जिस पर सिंहावलोकन किया गया हो। retrospected

**सिंहासन** पुं. (तत्.) 1. राजा के बैठने या किसी देवता आदि को स्थापित करने के लिए बनाया गया एक विशेष प्रकार का आसन जिसके दोनों ओर सिंह के मुख की आकृति बनी होती है 2. कमलपत्राकार एक विशेष देवासन 3. चंदन/रोली आदि का वह टीका या तिलक जिसे दोनों भौंहों के मध्य लगाया जाता है 4. कामशास्त्र में सोलह रति संबंधों में से एक 5. लोहे की कीट या मंड़र।

**सिंहासन चक्र** पुं. (तत्.) ज्योति. मनुष्या कृति का एक चक्र जिसके सत्ताईस खानों में 26 नक्षत्रों के नाम भरे जाते हैं और उनसे शुभाशुभ फल का विचार किया जाता है।

**सिंहासन-च्युत** वि. (तत्.) जिसे सिंहासन से या सत्ता से हटा दिया गया हो, सिंहासनभ्रष्ट, राज्यच्युत।